आदर्श योगी शिरडी साई

बीसवीं शताब्दी में दक्षिण भारत में शिरडी साई का खूब प्रचार हुआ। महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव में सच्ची आध्यात्मिकता को लेकर जन्मे साई ने प्रमाणित कर दिया कि वे परमयोगी है।

इस भौतिक दुनिया में अपने जीवनकाल में और उसके बाद भी सबकी सहायता कर रहे हैं साई। परन्तु ऐसी महान शक्ति को उन्होंने कैसे प्राप्त किया? वे परम आत्मा कैस हो गए? परम योगी होने के लिए कोई विशेष शिक्षा ली थी क्या? बिल्कुल नहीं। शिरडी साई या वीर ब्रह्मेन्द्र स्वामी या मंत्रालय राघवेन्द्र स्वामी आदि महापुरुष अपनी महान ध्यान योग साधना द्वारा उस महान अवस्था तक पहुँच सके कि आज मंदिरों में उनकी पूजा की जाती है।

ध्यान योग साधना से ही सब योगी हो जाएँगे। योगी ही योग्य है, ध्यानी ही धन्य है। ये दोनों चाहते हैं कि सभी योगी बनें। शिरडी साई तथा अन्य योगी भी हमसे यही चाहते हैं। इसलिए हमें भी योगी होकर, स्वयं ध्यान करकेउनके प्रति अपने आदर-भाव को दिखाना है परन्तु अपनी इच्छाओं को उनके सामने रख कर उन्ह परेशान नहीं करना। यह नहीं कहना कि 'हे साई! मुझे पुत्र दीजिए, नौकरी दिलाइए, मेरा ऋण चुकाइए' आदि। उन्हें परेशान न करके, पापकर्म त्यागकर योगी बनना है।

अखण्ड खण्ड योगी ह शिरडी साई!

अष्टसिद्धियों को हस्तगत करने वाले सिद्ध हैं श्री साई। हमे भी उन्ही की तरह योगी बनना है, वे हमारे आदर्श है। अत: अभी योग साधना शुरु करेंगे। सिर्फ़ उनके नाम को जपने से कोई योगी नहीं हो जाता जैसे त्यागराज के नाम-जप से कोई संगीतज्ञ नहीं हो जाता। एक बार साई के जीवन-चरित का अध्ययन कर तदुपरान्त हमें योग साधना करनी चाहिए। यही साई चाहते हैं। उन्होंने अपने ध्यानानुभव से हमकों यही समझाया। हमें उनके भक्त होने की बजाय उनका शिष्य होना चाहिए, फिर हम भी गुरु बनेंगे।

जिस प्रकार माता-पिता अपनी संतान की उन्नति और ख्याति चाहते हैं, उसी प्रकार महापुरुष और परमात्मा भी प्रत्येक व्यक्ति को महापुरुष के रूप में देखना चाहते हैं और इसके लिए प्रयास भी करते हैं। वे कभी फूल या फल नहीं चाहते।

अपनी समस्याओं का हल निकालने की शक्ति हमारे भीतर ही है, इसीलिए श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं-उद्धरेदात्म नात्मानं। किसी भी देश या किसी भी युग में हा अपना उद्धार हमें स्वयं करना है।

साई का कहना एक बात है और उसे जीवन में उतार लेना दूसरी बात। यदि ऐसा हम कर पाएँ तो हमारी स्थिति ऐसी शोचनीय नहीं रह जाएगी। हम अब ध्यान करेंगे। ध्यान अर्थात् नाप-जप नहीं, साँस पर ध्यान देंगे। आनापानसति द्वारा दिव्यचक्षु को उत्तेजित करेंगे। फलस्वरूप ज्ञानचक्षु की परिपक्वता आ जाएगी।

हे साई! हम सब इस जन्म में ही तुम जैसे बन कर इस भूमि को मास्टर्स से भर देंगे। ध्यान, स्वाध्याय और सज्जन संगति आदि हथियारों के प्रहार से भुवि को दिवि बना देंगे।